हृदय की समस्या पर काबू पाना

एक मुट्ठी बनाइये। इसकी ओर देखिए। आपकी छाती के अन्दर लगभग मुट्ठी के आकार का अर्थात $5^{1/2} \times 3^{1/2} \times 2^{1/2}$ इंच के आकार की एक खोखली मांसपेशी है। पुरुषों में, इसका भार लगभग ग्यारह औंस [अर्थात 300 ग्राम] होता है; जबकि महिलाओं में यह केवल नौ औंस की अर्थात 250 ग्राम होता है। यह हर समय पूरे शरीर में लगभग पांच क्वार्टस लहू का संचार करता है। यह प्रतिदिन लगभग 1,00,000 बार धड़कता है चाहे कोई जाग रहा हो या सोया हुआ हो। यह पूरे शरीर में भोजन तथा ऑक्सीजन ले जाकर शरीर को जीवित तथा सचेत रखने के लिए मल आदि निकालते हुए लगभग 1,00,000 शिराओं से जुड़ा हुआ है। चिकित्सक इस अंग पर जन्म से पहले से मृत्यु तक नज़र रखते हैं। हां, मैं शारीरिक जीवन के मुख्य भाग हृदय की बात ही कर रहा हूं।

जिस प्रकार से शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हृदय प्रमुख/जरूरी है, उसी प्रकार आत्मिक स्वास्थ्य के लिए *आत्मिक* हृदय मुख्य है।[1] आत्मिक हृदय दिखाई नहीं देता। यदि इसे हाथ में पकड़ा जा सकता तो भी आप इसे देख नहीं सकते थे। अच्छे से अच्छे सर्जन (डॉक्टर) के पास ऐसा नश्तर नहीं है जो इसे छू भी सके। परन्तु, जिस प्रकार से शारीरिक हृदय पर चिकित्सक लगातार ध्यान लगाए रखता है, वैसे ही आत्मिक हृदय पर परमेश्वर का ध्यान रहता है। हृदय के चलने से ही मनुष्य चलता है।

आत्मिक हृदय की परिभाषा

परमेश्वर के लिए हृदय अर्थात मन का कितना महत्व है ? मेरे पास सबसे बड़ी पुस्तक *यंग'स अनेलिटिकल कंकोर्डेन्स टू द बाइबल* है। यह एक विस्तृत कंकौर्डेन्स है जिसका अर्थ है कि इसमें बाइबल का प्रत्येक शब्द वर्णमाला के अनुसार है। इसके बड़े-बड़े पन्नों पर कई कॉलम हैं और छपाई इतनी बारीक है कि आपको इसे पढ़ने के लिए मैग्निफाइंग ग्लास की आवश्यकता पड़ सकती है। इस पुस्तक में, ''हृदय'' शब्द की व्याख्या के लिए पूरे तीन पृष्ठ दिए गए हैं अर्थात इसके एक हज़ार से अधिक हवाले हैं!

आइए उन हवालों में से एक को देखते हैं जो मेरी बात की बड़ी सुन्दरता से पुष्टि करता है:

परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है (1 शमूएल 16:7)।

इब्रानी शब्द के अनुवाद ''रूप'' का अक्षरशः अर्थ ''चेहरा'' है। परमेश्वर ने शमूएल से बाहरी रूप न देखने के लिए कहा। मनुष्य बाहर का रूप देखकर न्याय करते हैं, परन्तु ''परमेश्वर मन को देखता है'' जो हमारे अस्तित्व का अदृश्य, अमूर्त, मुख्य भाग होता है। यह वहां पर होता है जहां से देख सकता है कि हम किसे पसन्द करते हैं और किससे घृणा करते हैं, किसमें दिलचस्पी लेते हैं और किसमें नहीं, हम सच्चे मन से कोई कार्य कर रहे हैं या नहीं।

पवित्र शास्त्र में स्वस्थ मनों को कई नाम दिए गए हैं: सीधा मन, शुद्ध मन, करुणामय मन, प्रशन्सा करने वाला मन, स्तुति करने वाला मन जो अच्छी औषधि की तरह है, आनन्दित मन, बुद्धि से भरा मन, तैयार मन और भी कई प्रकार के मन हैं। अस्वस्थ मनों को कठोर, हठी, विभक्त, धोखा देने वाले और घमण्डी कहा गया है। मूर्तिपूजकों को ऐसे लोग कहा गया है जिनके मन अन्य देवताओं की ओर मुड़ गए हैं। सबसे बुरी हालत में, अस्वस्थ मनों को अन्धा कहा गया है।

''मन'' शब्द के संक्षिप्त अध्ययन से पता चल सकता है कि हमारा अध्ययन कितना महत्वपूर्ण है। इब्रानी भाषा में ''मन'' शब्द को *लेबाब* कहा गया है: रॉबर्ट गर्डलस्टोन ने इस शब्द पर *सिनोनिम्स ऑफ द ओल्ड टैस्टामेन्ट* में इस पर चर्चा की है:

[मन] में न केवल उद्देश्य, भावनाएं, मनोभाव, और इच्छाएं ही, बल्कि इच्छा, लक्ष्य, सिद्धांत, विचार तथा बुद्धि भी शामिल है। वास्तव में इसमें समस्त अंदरूनी व्यक्ति आ जाता है, बुद्धि के सिंहासन के रूप में सिर को नहीं बल्कि मन को ही मान्यता दी जाती है। समस्त कार्य के स्रोत तथा भावना के केन्द्र के रूप में भी मन को सब प्रकार के प्रभावों को ग्रहण करने वाला माना जाता है, वे प्रभाव बाहर के संसार से हों या स्वयं परमेश्वर की ओर से।[2]

नये नियम का पूरक शब्द *कार्दिया* है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द, ''कार्डियोलोजिस्ट,'' ''कार्डियाक अरैस्ट,'' और ''कार्डियोग्राम'' शब्द मिले हैं। नौ अंकों में अपनी पुस्तक *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट* में किट्टल ने *कार्डिया* शब्द का अर्थ ढूंढ़कर टिप्पणी की:

मन मनुष्य के भीतरी जीवन का केन्द्र और सब सामर्थ व प्राण और आत्मा के कार्यों का स्रोत अथवा स्थान है जिसे नये नियम में कई प्रकार से प्रमाणित किया

> गया है। क. मन में भावनाएं तथा मनोभाव, इच्छाएं तथा आवेग निवास करते हैं। आनन्द, ... पीड़ा तथा शोक, ... प्रेम, ... इच्छा, ... ख. मन में समझ रहती है, जो विचार तथा भावना का स्रोत होती है। ... ग. मन में इच्छा होती है जो निश्चयों का स्रोत है। इस प्रकार [कार्डिया] मनुष्य के बाहरी पक्ष के बजाय उसके भीतरी पक्ष को बताता है, ... इस प्रकार मनुष्य में मन सर्वश्रेष्ठ स्थान पर है जिसके पास परमेश्वर आता है, जिसमें उसका धार्मिक जीवन है, जो उसका नैतिक आचरण तय करता है।[3]

जीवन में परमेश्वर की इच्छा के लिए, परमेश्वर की चाह के लिए और परमेश्वर के उद्देश्य के लिए जैसे आपका मन चलेगा वैसे ही आप चलेंगे। शारीरिक हृदय के प्रभावित होने पर समस्त शरीर प्रभावित होता है। इसी प्रकार जब हमारा आत्मिक हृदय अर्थात मन कठोर, हठी, अस्वस्थ होता है तो परमेश्वर के साथ हमारे मन को क्या रोग है।

आपके मन की वास्तविक स्थिति को दिखाने के लिए अब तक किसी मानवीय औज़ार की खोज नहीं हो सकी है। हम में से कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति के मन में तो झांक नहीं सकता, परन्तु परमेश्वर ने हमें एक औज़ार दिया है जिसके द्वारा हम अपने मनों में झांक सकते हैं: उस औज़ार को बाइबल कहते हैं। लिखा है,

> क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है (इब्रानियों 4:12)।

इस नश्तर से परमेश्वर हर रोज "ओपन हार्ट सर्जरी" करता रहता है!

जब बाइबल हमारे मनों के रोगों को दिखा देती है, तो हमें इसका इन्कार करने में सावधानी बरतनी चाहिए। शुरू-शुरू में बहुत से लोग हृदयाघात (हार्ट अटैक) की बात से इन्कार करते हैं: "मुझे कुछ नहीं हुआ है। मैं ठीक हूं। यह तो कोई बुरा सपना था, या खाने में कोई गड़बड़ी थी!" इस संसार का प्रत्येक दबाव हमारे मनों को परमेश्वर से दूर करके दुखी करने, उसकी इच्छा के विषय में हमारे मनों को कठोर करने का यत्न कर रहा है। हमारे साथ जब ऐसा होता है, तो पहली बार हम इन्कार करते हैं कि हमारे साथ ऐसा कुछ हो रहा है। अगले कुछ मिनटों में उस इन्कार के प्रति चौकस रहें, क्योंकि हम उन दो पदों में जा रहे हैं जो हमें मन की महान सच्चाइयां सिखाते हैं।

आत्मिक हृदय अर्थात मन का उपचार

यशायाह 29

पहले, यशायाह 29 की ओर चलते हैं। हम इस पद को बाइबल के अनुसार कार्डियोग्राम

लेने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। बेशक मैं आपको आपके मन की स्थिति तो नहीं बता सकता, परन्तु मैं आपको वह औज़ार दिखा सकता हूं जो यह विश्लेषण करने में आपकी सहायता करेगा। आपको अपना कार्डियोग्राम अवश्य पढ़ना चाहिए। आपको अपने मन के स्वास्थ्य के लिए परमेश्वर के सामने ईमानदारी से उत्तर देना चाहिए।

यशायाह 29 ''हाय की बातें'' के संदर्भ में भविष्यवक्ता द्वारा दिया गया है। अध्याय 28 से 33 में, केवल एक अध्याय ''हाय'' शब्द के बिना आरम्भ होता है:

> घमण्ड के मुकुट पर हाय! जो एप्रैम के मतवालों का है (यशयाह 28:1क)।
>
> हाय, अरीएल, अरीएल, हाय उस नगर पर जिसमें दाऊद छावनी किए हुए रहा! (यशायाह 29:1क; ''अरीएल'' सम्भवत: यरूशलेम को कहा गया है)।
>
> यहोवा की यह वाणी है, हाय उन बलवा करने वालों लड़कों पर (यशायाह 30:1क)।
>
> हाय उन पर जो सहायता पाने के लिए मिस्र को जाते हैं (यशायाह 31:1क)।
>
> देखो, एक राजा धर्म से राज्य करेगा, और राजकुमार न्याय से हकूमत करेंगे (यशायाह 32:1; यही आयत एक अपवाद है)।
>
> हाय तुझ नाश करने वाले पर ... जब तू नाश कर चुके, तब तू नाश किया जाएगा (यशायाह 33:1)।

यहां हमें अन्त के दिन की बातों की एक शृंखला मिलती है। यशायाह ने यह कहते हुए कि ''विपत्ति निकट है, इसलिए जाग उठो!'' इस्राएल की कठोरता पर अंगुली उठाई। उसने शास्त्र में बड़े आराम से लिख दिया, परन्तु जब हम एक-एक अध्याय, एक-एक कष्ट को पढ़ते हैं, तो दया का एक बड़ा सागर छलकता है।

अध्याय 29 के मध्य, आयत 13 से लेकर इस भविष्यवक्ता की बातें बड़ी व्यक्तिगत हो गई थीं। उपचार पर ज़ोर देने से पहले आइए लक्षणों पर ध्यान दें:

(1) *स्नेहशून्य सेवा* (आयतें 13क,ग)। ''और प्रभु ने कहा, ये लोग जो मुंह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते हैं'' (यशायाह 29:13क)। परमेश्वर कह रहा था, ''मेरी उपस्थिति में वे बड़ी मीठी-मीठी बातें करते हैं। वे मेरी स्तुति करते हैं। उनकी बातें सही लगती हैं, *परन्तु* ... ।'' मीठी-मीठी बातें करना और परमेश्वर की महिमा करना सम्भवत: इस्राएलियों की प्रार्थनाओं को कहा गया है। अध्याय 1 में प्रभु ने कहा था, ''जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूंगा; तुम कितनी

ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं'' (यशायाह 1:15)।

आइए अध्याय 29 की ओर लौटते हैं: आयत 13 के अन्त में प्रभु ने जोड़ा, ''[वे] केवल मनुष्यों की आज्ञा सुन सुन कर मेरा भय मानते हैं'' (आयत 13ग)। यह बात हमारे लिए है जो बचपन से ही कलीसिया की आराधना में आ रहे हैं, जिन्हें भजन ज़बानी याद हैं, जो बाइबल की पुस्तकों से अपने मार्ग को जानते हैं, जो कुछ ही क्षणों में काफी लम्बी प्रार्थना तैयार कर सकते हैं। क्या हमारा धर्म व्यक्तिगत है या ''मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर'' ऐसा बन गया है? इस्राएल के आत्मिक रोग का पहला लक्षण यह था कि वे जो कुछ कर रहे थे वह मन से नहीं केवल लोगों को देखकर ही था।

(2) *गुप्त पाप* (आयत 15)। आयत 15 दूसरे लक्षण की बात करती है: वे ऐसे काम कर रहे थे जो उन्हें करना नहीं चाहिए था, परन्तु वे ऐसा इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्हें लगता था कि कोई उन्हें देख नहीं सकता। ''हाय उन पर जो अपनी युक्ति को यहोवा से छिपाने का बड़ा यत्न करते, और अपने काम अंधेरे में करके कहते हैं, हमको कौन देखता है? हमको कौन जानता है?'' बचपन में तकिये के नीचे टार्च छुपाकर चालाकी दिखाने की कोशिश करते थे जब हमारी मां कहती थी, ''पढ़ना बन्द करके अब सो जाओ'' तो हमें लगता था कि हमने मां को बुद्धू बना दिया, परन्तु हमने वास्तव में उसे कभी बुद्धू नहीं बनाया। बहुत से लोगों को लगता है कि गुप्त में पाप करके वे परमेश्वर को मूर्ख बना रहे हैं, परन्तु वे उसे मूर्ख नहीं बना सकते। परमेश्वर सब कुछ देखता है; परमेश्वर सब कुछ जानता है!

(3) *उलझन भरे तर्क* (आयत 16)। तीसरा लक्षण दूसरे दोनों लक्षणों का तर्कसंगत परिणाम था: उनकी सोच प्रभावित हो गई थी। आयत 16 आरम्भ होती है, ''तुम्हारी कैसी उलटी समझ है!'' अन्य शब्दों में, परमेश्वर उन्हें बता रहा था, ''तुम उलझन में पड़े हुए हो!'' विशेषकर वे यह सोचने लगे थे कि परमेश्वर इन्सान की तरह है। भविष्यवक्ता के कहने के अनुसार यह तो वैसे ही बेतुका है जैसे मिट्टी का अपने कुम्हार से प्रश्न करना: ''क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु अपने कर्त्ता के विषय में कहे कि उसने मुझे नहीं बनाया, या रची हुई वस्तु अपने रचने वाले के विषय में कहे, कि वह कुछ समझ नहीं रखता?'' (आयत 16ख)। कुम्हार ने तो इसे बनाया है, और वह जैसा चाहे इस मिट्टी को रूप दे देता है। परन्तु, जब लोग अपना मन कठोर कर लेते हैं, तो उन्हें लगता है कि उनके जीवनों पर नियन्त्रण करने का परमेश्वर का कोई अधिकार नहीं है।

लक्षणों पर ध्यान करने के बाद, आइए उपचार के लिए आयत 13 के मध्य में चलते हैं: ''परन्तु *अपना मन* मुझ से दूर रखते हैं'' (आयत 13ख)। परमेश्वर का कहना था कि उसके लोगों को हृदय रोग अर्थात मन का रोग था।

आपके मन के रोग को शायद कोई और नहीं बता सकता। लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करने वाले, बड़ी मधुर आवाज में गाने वाले, सैकड़ों लोगों को अपनी बातों से मोहित

करने वाले ही मन के सबसे बड़े रोगी हो सकते हैं। शारीरिक रूप से दिल का दौरा पड़ने पर आप कह सकते हैं कि मुझे दिल का दौरा पड़ा, परन्तु मेरे कठोर मन को देखकर नहीं कह सकते कि मैं बीमार हूं। मैं आपको धोखा दे सकता हूं, और आप मुझे धोखा दे सकते हैं; परन्तु हम में से कोई भी आदमी परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकता। उसने यशायाह के समय लोगों के मन की हालत को देख लिया था और आज भी वह प्रत्येक व्यक्ति के मन की स्थिति को देख सकता है।

मत्ती 15

आप शायद इस पर आपत्ति कर सकते हैं, ''परन्तु यह तो पुराने नियम की बात है। यह तो यहूदियों के लिए लिखा गया था। आप कैसे कह सकते हैं कि यह हम पर लागू होता है?'' आइए नये नियम में मत्ती 15 अध्याय में जाते हैं। भविष्यवक्ता द्वारा यशायाह 29 के लिखे जाने के बाद सैकड़ों वर्ष बाद, धर्मी दिखाई देने वाले तथा अच्छी-अच्छी बातें करने वाले लोगों के लिए, जिनके मन शुद्ध नहीं थे अभी भी ये शब्द उपयुक्त थे। इस कारण, यीशु ने अपने सबसे जिद्दी आलोचकों, शास्त्रियों तथा फरीसियों का सामना करते हुए यशायाह के शब्दों का इस्तेमाल किया।

''तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?'' (आयतें 1, 2) मन के बजाय बाहर से अर्थात चेहरे को देखने का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यीशु ने उत्तर दिया:

> तुम भी अपनी रीतियों के कारण पमरेश्वर की आज्ञा क्यों टालते हो? क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। पर तुम कहते हो, यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को अर्पित किया जा चुका है। तो वह अपने माता-पिता का आदर न करे। सो तुमने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया (आयतें 3-6)।

अनुवादित यूनानी शब्द ''टाल दिया'' ''अधिकार'' (*kuros*) के लिए शब्द के क्रिया रूप से निकला है। इस शब्द के पहले अल्फा[4] है, जो कि हमारी भाषा के उपसर्ग *अ* और *गैर* की तरह ही है; इससे किसी शब्द का अर्थ उलट हो जाता है। इसलिए, यीशु कह रहा था, ''तुमने अपनी परम्परा से परमेश्वर के वचन को अनाधिकारिक बना दिया है।''

यीशु ने कहानी को जारी रखा: ''हे कपटियो'' (आयत 7क)! आपने अन्तिम बार किसी को ''हे कपटी'' कब कहा था? शायद आपके जीवन में ऐसा समय कभी नहीं आया, बेशक ऐसा समय तो आया होगा जिसमें यह कहना उपयुक्त हो। नियम के अनुसार, हम दूसरे लोगों को कपटी नहीं कहते, क्योंकि हमें पक्का पता नहीं होता कि वे कपटी हैं भी या नहीं, परन्तु यीशु किसी को कपटी कह सकता था। यीशु ने अपने आलोचकों के मन में

झांककर, वास्तव में कहा, ''तुम लोग बाहरी बातों में फंसे हुए हो, और तुम उन लोगों की आलोचना करते हो जो तुम्हारी परम्पराओं को नहीं मानते; परन्तु भीतर से तुम परमेश्वर से सच्चा प्रेम नहीं करते। तुम्हारा मन सड़ा हुआ है अर्थात रोगी है!''

मत्ती 15:7ख-9 में यीशु ने वही आयतें उद्धृत कीं जिन्हें हमने यशायाह 29 में देखा था: ''यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक ही की है। कि 'ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्य की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।' '' उस सबसे बड़े चिकित्सक ने उन लोगों की जांचकर उनका उपचार किया: ''अगर तुम जल्दी कुछ नहीं करते, तो कुछ भी हो सकता है। कोई उम्मीद नहीं है। तुम्हें मन का रोग है और बहुत बड़ा अटैक होने वाला है!''

फरीसियों से मुड़कर यीशु वहां उपस्थिति लोगों की ओर हो गया और कहने लगा, ''सुनो और समझो। जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता है, पर जो मुंह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है'' (आयत 10ख, 11)। किताबों की दुकान पर जाएं तो आपको सम्भवत: मुंह *में* जाने वाली वस्तुओं, अर्थात पाककला, पोषण विज्ञान आदि पर ढेरों पुस्तकें मिल जाएंगी, परन्तु मुंह *के बाहर* आने वाली वस्तुओं पर शायद ही कोई पुस्तक मिले। जो कुछ मुंह के अन्दर जाता है वह महत्वपूर्ण है, परन्तु जो मुंह से निकलता है वह उससे भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी बातों से ही पता चलता है कि हमारे मन में क्या है (लूका 6:45)।

यीशु ने ग्रंथियों तथा फरीसियों के अन्दर तक झांक कर ऐसी घोषणा की थी, ''तुम्हारी समस्या आराधना की ही नहीं है; तुम्हारी समस्या शिक्षा की समस्या भी नहीं है; तुम्हारी समस्या तो मन की है!''

यदि लोग आराधना सभाओं में विश्वासपूर्ण नहीं आते, तो यह आराधना में उपस्थिति की उतनी नहीं है जितनी मन की समस्या है। उतना चन्दा न होने पर जितना दिया जाना चाहिए मुझे दुख होता है। इससे कलीसिया के काम पर बहुत प्रभाव पड़ता है। परन्तु जब दिन ब दिन हमारा चन्दा कम होता जाए, तो हमारी समस्या चन्दा देने की नहीं मन की समस्या है। जब हम अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा तथा बपतिस्मा देने का काम नहीं करते तो मुझे दुख होता है। परन्तु, फिर कहता हूं कि यह आत्माओं को जीतने की समस्या नहीं है। यह तो हमारे मन की समस्या है।

सारांश

मैं आपके मन में किसी प्रकार से झांक नहीं सकता, और आप भी मेरे मन में किसी प्रकार से झांक नहीं सकते। अन्त में, यह मामला प्रत्येक व्यक्ति और परमेश्वर के बीच चला जाता है। मेरे मन का आकार कैसा है? आपके मन का आकार कैसा है? नीचे कुछ खोजपूर्ण प्रश्न दिए गए हैं जो यह जानने में हमारी सहायता कर सकते हैं:

1. क्या मेरे लिए आराधना केवल औपचारिकता ही है?

2. क्या मेरे लिए प्रार्थना केवल निरर्थक शब्दों की एक कड़ी अर्थात केवल मुंह से बोलना ही है?

3. क्या परमेश्वर मुझ से दूर लगता है अर्थात मेरी आवश्यकताओं से दूर है?

4. क्या मैं बाहरी बातों में इतना घिर गया हूं कि मेरे इन सब स्रोतों को नज़रअन्दाज कर दिया है?

5. क्या मैंने परमेश्वर के अधिकार तथा उसके वचन से बढ़कर अपनी इच्छा को आगे कर दिया है?

6. क्या मेरे मन तथा जीवन में बुराई को सहन किया जा रहा है यहां तक कि पनपने दिया जा रहा है?

7. क्या इसी हालत में रहते मुझे इतना समय हो चुका है कि अब मुझे इन बातों से कोई कष्ट नहीं होता? क्या मेरा मन और कठोर होता जा रहा है?

मांसपेशी के उस खोल के बारे में फिर से विचार कीजिए जो आपकी देह में रक्त का संचार करता है। सम्पूर्ण भौतिक जीवन उस छोटी सी मांसपेशी पर ही टिका हुआ है। अब उस हृदय पर भी विचार कीजिए जिसे बाइबल मन भी कहती है जो आपके आत्मिक जीवन का स्रोत है और रोगी है। यदि आप परमेश्वर की सहायता से इसका कुछ नहीं करते तो इसकी आत्मिक मृत्यु सुनिश्चित है।

परमेश्वर आपका कठोर, रोगी मन लेकर इसे फिर से जीवन दे सकता है। मसीह का लहू आपके मन को धोकर फिर से शुद्ध बना सकता है। परन्तु, इसका आरम्भ आपके समर्पण से ही होगा। क्या आप अपने आपको प्रभु के सामने समर्पण करेंगे? यदि आपने मसीह में बपतिस्मा नहीं लिया, तो आज ही क्यों नहीं लेते (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)? यदि आपको प्रभु में लौटने की आवश्यकता है, तो अभी समय है (प्रेरितों 8:22, 23; याकूब 5:16)।

पाद टिप्पणियां

[1]यह पाठ कई साल पहले चार्लस स्विंडॉल द्वारा रेडियो पर दिए गए संदेश पर आधारित है। [2]राबर्ट बेकर गर्डलस्टोन, सिनोनिमस ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेन्ट। [3]जोहानस बेहम, थियोलोजिकल डिक्शनरी आफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट, सम्पा. गर्हार्ड किट्टल, अनु. व सम्पा. ज्योफरी डब्ल्यू. बोमिले। [4]हमारे "अ" की तरह, अल्फ़ा यूनानी वर्णमाला का पहला अक्षर है।

मसीही लोगों की उदारता से टुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल बिना कोई कीमत लिए ये पुस्तकें आपको उपलब्ध करवा सका है। अपनी mailing list को अपडेट करने के लिए हमें आपसे निम्न जानकारी चाहिए।

यह पुष्टि करने के लिए कि आपकी जानकारी अभी भी सही है, कृपया हमें साल में कम से कम एक बार अवश्य लिखें कि क्या आपको यह सामग्री लगातार सही पते पर मिल रही है और आपके लिए कैसे सहायक हो रही है। आपकी सेवकाई में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एक पर टिक करें: ☐ पुरुष ☐ स्त्री

(नोट: सम्भव हो तो पता अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में लिखें)

नाम: ____________________

पूरा पता: ____________________

____

____________________ PIN ____________

पुराना पता (पता बदलने की स्थिति में): ____________________

____

____

____________________ PIN ____________

ई-मेल पता: ____________________

कलीसिया का नाम: ____________________

स्थान : ____________________

प्रचारक का नाम: ____________________

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं, वहां आपकी सेवा क्या है?

☐ प्रचारक ☐ सदस्य

☐ बाइबल क्लास टीचर ☐ सदस्यता नहीं

क्या आपको टुथ फ़ॉर टुड़े वर्ल्ड मिशन स्कूल का साहित्य लगातार मिल रहा है? (एक पर टिक करें):

☐ नहीं

☐ हां, डाक से

☐ हां, श्री ____________________ के पास से।

आप किस भाषा में पुस्तकें पाना चाहेंगे? (केवल एक ही टिक करें):

☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू ☐ अंग्रेज़ी

आप इस सामग्री का इस्तेमाल कैसे करते हैं/करेंगे? ____________________

____

यदि आप ऐसे व्यक्तियों को जानते हों जो इस सामग्री को लगातार प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस फार्म की कापी करवाकर उनके नाम से यह फार्म Truth for Today, P.O. Box 44, Chandigarh - 160017 के नाम डाक द्वारा भेज दें।